ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 161-164**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

जीवंत लोक परंपराएंः संरक्षण, संवर्धन और नवाचार

डॉ0 रश्मि शर्मा
एसो0 प्रोफेसर– विभाग प्रभारी चित्रकला विभाग, किशोरी रमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा (उ0प्र0) भारत

Received-27.07.2026, Revised-05.08.2026, Accepted-13.08.2026, **E-mail:2004rashmisharma@gmail.com**

सारांशः *भारत एक विविधताओं से भरा देश है, जहाँ रंगोली, चित्र, शिल्प, संगीत, नाट्य, त्यौहारों की अपनी एक अनोखी सांस्कृतिक धरोहर है। भारत के हर क्षेत्र में ग्राम देवता, कुलदेवी और नवग्रह पूजा की अपनी परंपराएँ हैं। ये लोक–देवता और ग्रामीण रीति–रिवाज स्थानीय भक्ति की अनोखी छवि प्रस्तुत करते हैं। इन पूजा–विधियों में समुदाय का जीवन, मौसमी उत्सव, पारिवारिक परंपराएँ और पूर्वजों का सम्मान एक साथ जुड़ता है। यह दिखाता है कि धर्म प्रत्येक गाँव और परिवार में अपने तरीके से कैसे फलता–फूलता है।*

भारत की सांस्कृतिक परंपराएं जितनी विविध हैं, उतनी ही गहन भी हैं। इनमें कुछ परंपराएं समय के साथ इतिहास में धुंधली हो गईं, तो कुछ आज भी अपनी पूरी सघनता और सार्थकता के साथ जन मानस में जीवित हैं। यहाँ वे परंपराएँ और संस्कृतियाँ मिलती हैं जो कुछ ही मीलों में बदल जाती हैं, और जो भारत के गाँवों को रंगीन, विविध और जीवन्त बनाती हैं। कला, शिल्प, रिवाज़, कथा–कहानी और उत्सव का रंग यहाँ मिलकर समुदायों की सांस्कृतिक नींव तैयार करता है।

भारत की लोककला जैसे– सांझी, वारली, अल्पन, लोक–नृत्य और लोक–नाटक की पारम्परिक कलाएँ, यक्षगान, गरबा, घूमर और अनेक क्षेत्रीय कलायें रूप संगीत, लय और वेशभूषा के माध्यम से उत्सव, श्रद्धा, प्रेम और वीरता की अभिव्यक्ति करते हैं। पीढ़ियों से चली आ रही ये कथा–परंपराएँ धर्म, नीति और जीवन–मूल्यों को सरल भाषा में लोगों तक पहुँचाती हैं।

भारत का उत्सव–पर्व भी लोक–परंपराओं को और सुंदर बनाता है। ये त्यौहार प्रकृति, ऋतुओं और जीवन के चक्र से लोगों को जोड़ते हैं। हर उत्सव आनंद, कृतज्ञता और मनुष्य तथा प्रकृति के बीच संतुलन का संदेश देता है। ये तमाम परंपराएँ लोगों, प्रकृति और दिव्यता के बीच गहरे संबंध को बनाए रखते हुए पीढ़ियों को एक–दूसरे से जोड़ती हैं।

प्रस्तुत शोध लेख में हमने भारत की जीवंत लोक परंपराओं, उनके संरक्षण, संवर्धन और नवाचार पर चर्चा की है।

कुंजीभूत शब्द– लोककला, लोक–परंपराएं, भारतीयता, कुलदेवी,जनजातीय कला, साहित्य,सांस्कृतिक विरासत, संरक्षण,संवर्धन, नवाचार।

प्रस्तावना– लोक कलाएं भारत की सांस्कृतिक आत्मा हैं, जो सदियों पुरानी विरासत, विश्वासों और सामुदायिक मूल्यों को आधुनिक समय में भी जीवित रखती हैं। ये परंपराओं, कलाओं, त्योहारों और लोकगीतों के माध्यम से पहचान का संचार करती हैं, जो बदलते परिवेश के साथ तालमेल बिठाते हुए अपनी प्रामाणिकता बनाए रखती हैं। ये परंपराएं केवल अतीत का अवशेष नहीं हैं, बल्कि आधुनिक पहचान का भी एक हिस्सा हैं।

प्राचीन रीति–रिवाजों से लेकर जीवंत त्योहारों, पारंपरिक संगीत और नृत्य रूपों और कुशल कला, शिल्प कौशल तक ये जीवित परम्पराएँ आज भी पनप रही हैं और प्रेरणा दे रही हैं। वे हमें हमारी जड़ों से जोड़ने, हमारे पूर्वजों के ज्ञान, मूल्यों और रीति रिवाजों को संरक्षित करने के माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। तेजी से भागती दुनिया में जीवित परम्पराएँ निरंतरता की भावना प्रदान करती हैं, हमारी पहचान को आकार देने वाली विविध विरासत के लिए सराहना को बढ़ावा देती हैं। वे हमें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की स्थायी शक्ति और हमारी साझा मानवीय विरासत में पाई गई सुन्दरता की याद दिलाते हैं। जैसे ही हम इन जीवित खजानों का सम्मान और सुरक्षा करते हैं हम एकता, समझ और सम्मान की विरासत बनाते हुए भावी पिधिओं के लिए उनका संरक्षण सुनिश्चित करते है।

जीवंत परंपरा के प्रकार– जीवित परम्पराओं में सांस्कृतिक प्रथाओं, विश्वासों, कलाओं और ज्ञान प्रणालियों की एक विस्तृत श्रंखला शामिल है जो समकालीन समय में सक्रिय रूप से पारित और प्रचलित हैं। इन परम्पराओं को उनकी प्रकृति और विशेषताओं के आधार पर कई प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। यहाँ कुछ सामान्य प्रकार की जीवित परम्पराएँ दी गई हैंः

1. **अनुष्ठान और समारोहः** ये पारंपरिक रीति–रिवाज और धार्मिक प्रथाएं हैं, जो विशिष्ट अवसरों या आयोजनों जैसे शादियां, अंत्येष्टि, धार्मिक त्योहारों और मौसमी समारोहों के दौरान की जाती है।
2. **प्रदर्शन कलाएंः** प्रदर्शन कलाओं में जीवित परम्पराओं में विभिन्न नृत्य रूप, संगीत शैलियाँ, रंगमंच और कहानी सुनाना शामिल हैं, जिन्हें उनके सांस्कृतिक सन्दर्भों में सिखाया, प्रदर्शित और सराहा जाता है।
3. **त्यौहार और उत्सवः** सांस्कृतिक और धार्मिक त्यौहार जैसे दिवाली, क्रिसमस, ईद, होली और कई अन्य, जीवित परम्पराओं के उदाहरण हैं, जिन्हें दुनिया भर के समुदायों द्वारा मनाया जाता है।
4. **हस्तशिल्प और कारीगर कौशलः** पारंपरिक शिल्प जैसे, मिट्टी के बर्तन, बुनाई, कढाई, लकड़ी का काम, धातु का काम, पेन्टिंग, आदि जीवित परम्पराएँ हैं, जो कुशल कारीगरों की पीढ़ियों के माध्यम से चली आ रही हैं।
5. **पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँः** चिकित्सा, कृषि, स्थिरता और पारिस्थितिकी से सम्बंधित स्वदेशी ज्ञान और प्रथाएं जीवित परम्पराएँ हैं, जिन्हें मौखिक रूप से या प्रशिक्षुता के माध्यम से संरक्षित और प्रसारित किया गया है।
6. **पारंपरिक कपडे और पोशाकः** कपड़ों और पोशाक की शैलियाँ, जो सांस्कृतिक विरासत में गहराई से निहित हैं और अभी भी अपने– अपने क्षेत्रों में पहनी जाती हैं और सराही जाती हैं।
7. **लोककथाएंः** लोक कथाएं, मिथक और किवदंतियां, जो विभिन्न जो विभिन्न संस्कृतियों में मौखिक कहानी कहने की परंपरा का हिस्सा हैं, जीवित परम्पराएँ हैं, जो सांस्कृतिक पहचान और मान्यताओं को आकार देती हैं।
8. **मार्शल आर्ट और परम्परिक खेलः** प्राचीन युद्ध तकनीकें, मार्शल आर्ट और पारंपरिक खेल जीवित परम्पराएँ हैं, जिनका अभ्यास और सिखाया जाता है, उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व को संरक्षित करते हुए।
9. **भाषा और मौखिक परम्पराएँः** बोली जाने वाली भाषा, बोलियाँ और मौखिक कहानी कहने की प्रथाएं जीवित परम्पराएँ हैं, जो किसी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और इतिहास को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

कला, लोकसंस्कृति और परंपरा हमारे जीवन की आत्मा है। यह हमें सिखाती है कि हमारी सांस्कृतिक विविधता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। इसे केवल इतिहास की किताबों में सीमित रखना नहीं, बल्कि रोजमर्रा के जीवन में जीना ही सच्चा सम्मान होगा।

जीवंत लोक परंपराओं के प्रमुख क्षेत्र–

- **लोक कला और शिल्पः** बिहार की मधुबनी, पेपर–मैशे (कागज की लुगदी), और मंजूषा कला जैसे रूप, जो पारंपरिक और पर्यावरण के अनुकूल हैं, समकालीन कलाकारों द्वारा भी अपनाए जा रहे हैं।
- **कलाकार और समुदायः** महाराष्ट्र की वारली, आंध्र प्रदेश की कलमकारी, और ओडिशा की पटचित्र जैसी शैलियाँ समुदायों द्वारा अपनी पहचान को बनाए रखने के जीवंत उदाहरण हैं।
- **त्योहार और पर्यटनः** जैसलमेर के रेगिस्तान महोत्सव जैसे कार्यक्रम, पारंपरिक त्योहारों को पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाकर स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं, जो जीवंत परंपरा का एक उदाहरण है।

लोक परंपराओं का संरक्षण और संवर्धन– आज जब वैश्वीकरण की हवा चारों ओर चल रही है, हमारी लोकसंस्कृति और परंपरा को संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है, हमें सामूहिक स्मृति का हिस्सा बनाती है और एक सांस्कृतिक पहचान देती है।

- **डिजिटल और वैज्ञानिक संरक्षणः** 3D लेजर स्कैनिंग और ड्रोन जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करके विरासतों का डिजिटल दस्तावेजीकरण किया जा रहा है, ताकि उन्हें भविष्य के लिए सहेजा जा सके।
- **समुदाय–आधारित विकासः** लोक कलाकारों, विशेषकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए यूनेस्को जैसे संस्थान, ग्रामीण शिल्प और सांस्कृतिक केंद्र कार्यक्रम (RCCH) जैसी परियोजनाओं के माध्यम से काम कर रहे हैं, जो राजस्थान और पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्रों में कलाओं को पुनर्जीवित कर रहे हैं।
- **जागरूकता और शिक्षाः** नई पीढ़ी को इन परंपराओं से जोड़ने के लिए स्कूलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन किया जा रहा है।

नवाचार और आधुनिकीकरण– भारतीय लोक कलाओं में नवाचार और आधुनिकीकरण के माध्यम से पारंपरिक शैलियों (जैसे मधुबनी, गोंड, पट्टचित्र) को आधुनिक विषयों, जैसे– डिजिटल आर्ट, फैशन और समकालीन सामग्री (कैनवास, एक्रिलिक) के साथ जोड़ा जा रहा है, जिससे ये कलाएं आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स ने इन कलाओं को वैश्विक पहचान और आजीविका के नए अवसर प्रदान किए हैं, जो उनकी मौलिकता को बरकरार रखते हुए उन्हें एक आधुनिक रूप देते हैं।

- **सामग्री में परिवर्तनः** कलाकार अब पारंपरिक पेंटिंग के लिए कागज, कैनवास और एक्रिलिक रंगों का उपयोग कर रहे हैं, जो इस कला को अधिक टिकाऊ और आकर्षक बनाता है।
- **फैशन में लोक कलाः** लोक कला को कपड़ों पर पेंटिंग, ब्लॉक प्रिंटिंग और कढ़ाई के माध्यम से फैशन उद्योग में शामिल किया गया है, जो इस पारंपरिक कला को एक आधुनिक रूप प्रदान करता है। वर्ली चित्रों, पारंपरिक बुनाई और खादी उत्पादों को आधुनिक डिजाइनों के साथ मिलाकर वैश्विक बाजार (Global Market) के लिए उपयुक्त बनाया जा रहा है।
- **तकनीकी समावेशः** पारंपरिक कलाओं में आधुनिक तकनीक को मिलाकर, जैसे कि मधुबनी या वरली कला में 3D प्रिंटिंग और Augmented Reality (AR) का उपयोग, नई रुचि पैदा की जा रही है।
- प्रकृति के साथ समन्वयः लोक कलाओं में निहित पर्यावरण संरक्षण के संदेश (जैसे, वरली में पौधों का अंकन) का उपयोग आधुनिक 'सतत विकास' (Sustainable Development) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना– भारत, अपनी विशाल सांस्कृतिक विरासत के साथ, अपनी समृद्ध परंपराओं और कलाकृतियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा चुका है। कभी माइक्रोफिल्मिंग, माइक्रोफिश तैयारी और सावधानीपूर्वक नियंत्रित भंडारण वातावरण जैसी पुरानी तकनीकों पर निर्भर रहने वाला यह परिदृश्य, डिजिटलीकरण के आगमन के साथ एक आश्चर्यजनक कायापलट से गुजरा है। इस नए युग में, भारत की बहुमूल्य सांस्कृतिक सामग्रियों के संरक्षण में क्रांति आ गई है, जो अतीत की सीमाओं और बाधाओं को पार कर गई है। आज, मानचित्र, पांडुलिपियाँ, चित्र और ध्वनि रिकॉर्डिंग जैसी लगभग हर सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण वस्तु को नया जीवन मिल सकता है और डिजिटल माध्यमों से प्रभावी ढंग से संरक्षित किया जा सकता है। भारत ने इस डिजिटल पुनर्जागरण को खुले हाथों से अपनाया है, एक ऐसी यात्रा पर अग्रसर है जो अत्याधुनिक स्कैनिंग तकनीकों और नवीन पहलों को जोड़ती है, जो दुनिया के साथ अपनी सांस्कृतिक संपदा साझा करने की भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

भारत के सांस्कृतिक धरोहरों, पांडुलिपियों और संसाधनों को, जो अभिलेखागारों और संग्रहालयों में संग्रहित हैं, संरक्षण और सुलभता के संदर्भ में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, इंडियन हेरिटेज इन डिजिटल स्पेस (आईएचडीएस) जैसी पहलों ने देश की सांस्कृतिक संपदा को प्रलेखित और साझा करने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने हेतु गति प्रदान की है। कंप्यूटर विज़न, ग्राफिक्स, ऑडियो और वीडियो प्रौद्योगिकियां, और उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस डिज़ाइन परिवर्तनकारी संभावनाएं प्रदान करते हैं, जिससे जनता को अतीत से जुड़ने के लिए एक गहन अनुभव प्राप्त होता है। ये उपकरण शोधकर्ताओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत पर विद्वतापूर्ण अध्ययन करने में भी सक्षम बनाते हैं, जिससे अन्वेषण, शिक्षा और विद्वतापूर्ण अनुसंधान को बढ़ावा मिलता है। इसके अतिरिक्त, एआई, लेजर स्कैनिंग और फोटोग्रामेट्री सहित उन्नत उपकरण मूर्त विरासत के जीर्णोद्धार, डिजिटलीकरण और सटीक रिकॉर्डिंग में सहायता करते हैं। यह डिजिटल संरक्षण ऐतिहासिक शोध, जन शिक्षा और सांस्कृतिक जीवंतता के लिए नए रास्ते खोलता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) जैसे सरकारी निकाय, आईएनटीएसी और आईटीआरएचडी जैसे गैर–सरकारी संगठनों के साथ मिलकर भारत की विरासत के संरक्षण में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं।

सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक निर्माणः परंपरा और नवाचार के बीच संतुलन– तेजी से हो रहे तकनीकी विकास और निरंतर नवाचार के इस युग में, निर्माण उद्योग एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ अतीत और भविष्य का मिलन होता है। एक ओर, दक्षता और स्थिरता पर आधारित आधुनिक निर्माण तकनीकों, सामग्रियों और डिज़ाइनों पर ज़ोर बढ़ रहा है। वहीं दूसरी ओर, सांस्कृतिक विरासत, स्थापत्य परंपराओं और ऐतिहासिक महत्व के संरक्षण और सम्मान को भी महत्व दिया जा रहा है। परंपरा और नवाचार के

बीच संतुलन बनाए रखना आधुनिक निर्माण में एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। निर्माण के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना केवल ईंट और सीमेंट का मामला नहीं है; यह एक समुदाय की आत्मा की रक्षा करना है।

पर्यटन और आर्थिक लाभ– सांस्कृतिक धरोहर स्थल अक्सर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होता है। जिम्मेदार निर्माण पद्धतियों के माध्यम से इन स्थलों का संरक्षण और प्रदर्शन आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देकर रोजगार के मौके बढ़ाये जा सकते हैं।

परंपरा और नवाचार के बीच संतुलन बनाने में चुनौतियाँ– सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का महत्व निर्विवाद है, लेकिन परंपरा को आधुनिक निर्माण के साथ एकीकृत करना हमेशा आसान काम नहीं होता। कई चुनौतियाँ इस नाजुक संतुलन को जटिल बनाती हैं:

तकनीकी अनुकूलता: आधुनिक निर्माण तकनीकों और ऐतिहासिक संरचनाओं के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि निर्माण विधियों, सामग्रियों और नियमों में अंतर होता है। ऐतिहासिक इमारतों का निर्माण उनके समय की विशिष्ट तकनीकों और सामग्रियों का उपयोग करके किया गया था, जो समकालीन प्रथाओं के अनुरूप नहीं हो सकती हैं। किसी स्थल की ऐतिहासिक अखंडता को संरक्षित करते हुए आधुनिक निर्माण विधियों के साथ तकनीकी अनुकूलता सुनिश्चित करना एक जटिल कार्य है। इसमें ऐतिहासिक संदर्भ को समझना, अद्वितीय शिल्प कौशल को बनाए रखना और नियमों के जाल को समझना शामिल है। यह एक नाजुक प्रक्रिया है जिसके लिए ऐतिहासिक संरक्षण में विशेषज्ञता और इन संरचनाओं द्वारा दर्शाई गई सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत के प्रति गहरा सम्मान आवश्यक है।

वित्तीय बाधाएँ: सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एक नेक प्रयास है जिसके लिए अक्सर काफी वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। जीर्णोद्धार में की जाने वाली सावधानीपूर्वक मेहनत, विशेष सामग्रियों की खरीद और कुशल कारीगरों की नियुक्ति, ये सभी विरासत संरक्षण से जुड़ी लागतों में योगदान करते हैं। इसके अलावा, कड़े संरक्षण मानकों और नियमों का पालन करने से खर्च और भी बढ़ सकता है।

ऐसे युग में जहां दक्षता और लागत–प्रभावशीलता सर्वोपरि हैं, विरासत संरक्षण के लिए धन आवंटित करना वास्तव में चुनौतीपूर्ण प्रतीत हो सकता है। इसके लिए सावधानीपूर्वक वित्तीय योजना और बजटीय सीमाओं के बावजूद सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता आवश्यक है। इसके अलावा, विरासत संरक्षण का वित्तीय पहलू केवल तात्कालिक परियोजना लागतों तक ही सीमित नहीं है। इसमें रखरखाव और निरंतर संरक्षण प्रयासों के लिए दीर्घकालिक प्रतिबद्धता शामिल है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सांस्कृतिक विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए अक्षुण्ण और सुलभ बनी रहे।

नियामक बाधाएँ– ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण के लिए कड़े नियम और स्वीकृतियाँ आवश्यक हैं। आधुनिक निर्माण मानकों को पूरा करते हुए इन नियमों का पालन करना एक जटिल और समय लेने वाली प्रक्रिया हो सकती है।

नवीन डिजाइन चुनौतियाँ– ऐतिहासिक प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए आधुनिक डिजाइन नवाचारों को शामिल करना एक नाजुक कार्य हो सकता है। डिजाइन में नवाचार और परंपरा के बीच सही संतुलन बनाना सावधानीपूर्वक विचार–विमर्श की मांग करता है। फिर भी, जमीनी स्तर पर समुदायों को शामिल करके, पारंपरिक ज्ञान की रक्षा करते हुए, इसे आधुनिक दौर के अनुरूप ढालना ही लोक परंपराओं को जीवंत रखने का एकमात्र रास्ता है।

निष्कर्ष– भारतीय लोककला एवं जनजातीय कला, सांस्कृतिक विरासत का विशाल और अत्यंत समृध्द स्वरूप है। यह विरासत भारतीय समाज के अगाध इतिहास विविधता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते है। इसमे भारत के विभिन्न क्षेत्रो और जनजातियो। की भावनाओं, धार्मिक अनुष्ठान, स्थानीय परंपराओ और जीवन शैली का प्रतिनिधित्व होता है। यह भारतीय समुदायो के संबंध परंपराओ और जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा है और उनकी विविधता और एकता को प्रस्तुत करता है। भारतीय लोककला मे चित्रकला, संगीत, नृत्यकला, कथा नाट्य और शिल्पविधा जैसी विभिन्न कलाओ का समावेश होता है। यह कलायें समाज मे एकता, सहयोग और विश्वास को बढ़ावा देती है। और सांस्कृतिक विरासत को बचाने और बढावा देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विस्मित करने वाले चित्र, मंत्रमुग्ध कर देने वाले नृत्य रूप जो जीवन की लय को प्रतिध्वनित करते हैं। प्रत्येक जीवित परंपरा जिसका हमने सामना किया है वह मानवता के लचीलेपन और सरलता का प्रमाण है। ऐसी दुनिया जो लगातार विकसित होती और बदलती रहती है, जीवित परम्पराएँ दृढ आधार के रूप में काम करती हैं। यह हमें उन कालातीत मूल्यों और ज्ञान की याद दिलाती हैं, जिन्होंने पीढ़ियों से सभ्यताओं का मार्गदर्शन किया है। वे किसी बीते युग के अवशेष नहीं हैं, बल्कि जीवित संस्थाएं हैं, जो हमारे समाजों में जीवन फूंकती रहती हैं, उन्हें सुन्दरता, अर्थ और उद्देश्य से भरती रहती हैं।

जीवंत लोक परंपराएं भारत की सांस्कृतिक आत्मा हैं, जिनका संरक्षण, संवर्धन और आधुनिक नवाचार के माध्यम से विकास आवश्यक है। डिजिटल दस्तावेजीकरण, 3D स्कैनिंग, और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से इन विरासतों को सहेजकर, हम उन्हें प्रासंगिक बनाए रख सकते हैं। ग्रामीण शिल्प और कला को कौशल विकास से जोड़कर रोज़गार के अवसर पैदा किए जा रहे हैं। यहाँ हर किसी के लिए कुछ न कुछ देखने, समझने, सीखने और आनंद लेने योग्य है। बच्चा, युवा, माता–पिता, साधक, विद्वान या कथाकार कृ हर कोई भारत की इन रंगीन लोक–परंपराओं में डूब सकता है और देख सकता है कि प्राचीनता, निरंतरता और सामान्य जीवन किस तरह एक हो जाते हैं। यही परंपराएँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी सनातन जीवन की भावना को जीवित रखती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बोजर, अंजलि (1997), भारतीय लोक संगीत, प्रकाशक रवीश कुमार।
2. डॉ. भानवत, महेनद्र (1979), संस्कृति के रंग, भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर।
3. वात्स्यायन, कपिला (2001), भारतीय लोक नृत्य, साहित्य अकादमी।
4. डॉ. वर्मा, अविनाश बहादुर, अमित, (2007), कला एवं तकनीक, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
5. कान्त, मीनाक्षी (2015), भारतीय कला संस्कृति एवं विरासत, एसेस पब्लिशिंग।
6. डॉ. राजपुरोहित, भगवती लाल (2019), भारतीय कला और संस्कृति, शिवालिक प्रकाशन दिल्ली।
7. कुमार, अनूप (2020), इंडियन फोक एंड ट्राइबल आर्ट, बी. आर. पब्लिशर।
8. डॉ. श्रीवास्तव, अरुण कुमार (2021), भारतीय संस्कृति एवं विज्ञान, अर्नब इंटरप्राइसेस नई दिल्ली।

9. डॉ. रंजन, मनीष (2023), भारतीय कला एवं संस्कृति, प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.।
10. क्राफ्ट रिवाइवल ट्रस्ट। बिहार की पेपर माचे कलाकृतियाँ। एशिया इंचः अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का विश्वकोश। https://asiainch.org/craft/papier-mache-of-bihar/
11. चौहान, एम. (2022). पश्चिमी राजस्थान की पारंपरिक कुट्टी कला की बदलती प्रकृति। शोधकोशः जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 3(1), 134–148. DOI: https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v3.i1.2022.99.
12. साहू, एस. (2024, 6 मार्च)। बिहार का हस्तशिल्प मानचित्र। लिंक्डइन। https://www.linkedin.com/pulse/handicrafts-map-bihar-meraki-retail-and-tech-pvt-ltd-m5fb/
13. मालियार, बी.ए. (2021)। कश्मीर में पेपर–मैशे शिल्प का इतिहास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड मल्टीडिसिप्लिनरी साइंटिफिक रिसर्च, 4(6)। https://doi.org/10.31426/ijamsr.2021.4.6.4414.

*****